इकाई 34 द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद : भारत छोड़ो आंदोलन तथा आज़ाद हिंद फ़ौज

इकाई की रूपरेखा

34.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने वाली परिस्थितियों के बारे में जान सकेंगे,
- इस आंदोलन के प्रति भारतीय जनता के विभिन्न वर्गों के दृष्टिकोणों को समझ सकेंगे,
- देश के विभिन्न क्षेत्रों में इस आंदोलन की प्रतिक्रिया के बारे में जान सकेंगे,
- इस आंदोलन को कुचलने के लिए अंग्रेज़ सरकार द्वारा अपनाये गये दमनकारी उपायों के बारे में जान सकेंगे,
- इस आंदोलन की विशेषताओं और उसके महत्व के बारे में जान सकेंगे, और
- आज़ाद हिंद फ़ौज़ (आई. एन. ए.) के गठन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उसकी भूमिका के बारे में जान सकेंगे।

34.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आपको 1939-1945 के दौरान आज़ादी की लड़ाई की मुख्य राजनीतिक धाराओं से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। इस इकाई में मुख्यतः भारत छोड़ो आंदोलन और स्वतंत्रता के संघर्ष में आज़ाद हिंद फौज की भूमिका की ही चर्चा की गयी है।

हम यहां उस घटनाक्रम की चर्चा करेंगे जिसने अन्ततः भारत छोड़ो आंदोलन शुरू करवाया। कांग्रेस इस आंदोलन को चलाने और संगठित करने की योजना तैयार भी नहीं

कर पायी थी कि सरकार ने इसे आगे न बढ़ने देने के लिए अपना दमन चक्र शुरू कर दिया। लेकिन सरकार की सारी गणना गलत साबित हुई। क्योंकि लोगों ने, कांग्रेसी नेताओं की गिरफ़्तारी के बाद, अपना काम खुद करने का निर्णय लिया और अंग्रेज़ सरकार को उन्होंने इस तरह से चुनौती देना शुरू किया जिसकी तुलना एक सीमा तक 1857 के संघर्ष से की जा सकती है। नये नेता स्थानीय स्तरों पर उभर कर आये। उनकी भूमिका गांधीवादी संघर्ष से भिन्न थी। अहिंसा का सिद्धांत इस दौर में निदेशक सिद्धांत नहीं रहा। सरकारी सम्पत्ति पर व्यापक हमले होने लगे। हालांकि सरकार इस आंदोलन को कुचलने में सक्षम थी, परंतु इसकी तीव्रता ने स्पष्ट कर दिया था कि अंग्रेज़ भारत पर अधिक दिनों तक शासन नहीं कर सकेंगे। यह सच्चाई सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में गठित आज़ाद हिंद फौज और उसकी कार्रवाई से भी सामने आ रही थी। भारतीय अंग्रेज़ सरकार का सशस्त्र विरोध करने में केवल सक्षम ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने ऐसा किया भी, और आज़ाद हिंद सरकार का गठन भी किया।

1. देश से गंदगी साफ करो (भारत छोड़ो आन्दोलन पर एक कार्टून)

34.2 1939 से 1941 के बीच

आपको 1939 से 1941 के बीच की अवधि में हुई घटनाओं के क्रमिक विकास और उन परिस्थितियों के बारे में जानने में रुचि होगी जो अन्ततः भारत छोड़ो आन्दोलन का कारण बनीं।

34.2.1 युद्ध के प्रति दृष्टिकोण

विश्वयुद्ध के प्रति भारतीयों का दृष्टिकोण आंमतौर पर निम्न श्रेणियों में दर्शाया जा सकता है :

i) चूंकि ब्रिटेन संकट में था भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। यह काम निम्न तरह से किया जा सकता था :
   - युद्ध के लिए भारतीय संसाधनों को जुटाने के ब्रिटिश प्रयासों का विरोध करके।
   - अंग्रेज़ों के विरुद्ध मज़बूत आंदोलन खड़ा करके। इस विचार के प्रतिपादकों की मुख्य चिंता भारत की आज़ादी प्राप्त करने से थी, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से कुछ लेना-देना नहीं था।

ii) भारत को ब्रिटेन की समस्याओं से लाभ नहीं उठाना चाहिए। उसे ब्रिटिश युद्ध प्रयासों में बिना शर्त सहयोग करना चाहिए। जो इस विचार के समर्थक थे, वे सोचते थे कि युद्ध के समाप्त होने के बाद ब्रिटेन अपने प्रति भारत की सेवाओं को देखते हुए उसके प्रति नम्र रुख अपनायेगा और उसे समुचित रूप से पुरस्कृत करेगा।

iii) बहुत से भारतीय ऐसे थे जो फासीवाद (फासिज़्म) को मानवजाति के लिए बड़ा ख़तरा मानते थे और युद्ध में ब्रिटेन की मदद करना चाहते थे। लेकिन यह मदद सर्शत थी। ये शर्त थी, भविष्य में भारत की स्वतंत्रता और उस समय के लिए भारतीयों की एक अंतरिम सरकार।

iv) भारतीयों के कुछ वर्ग ऐसे भी थे जिनका दृष्टिकोण युद्ध की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहा। और ऐसे वर्ग भी थे जिन्होंने तटस्थ रवैया अपनाया।

इस परिस्थिति में कांग्रेस ने क्या किया? व्यावहारिक रूप से पूर्व वर्णित सभी दृष्टिकोण कांग्रेस के भीतर ही मौजूद थे और इन सबके होते एक निश्चित कार्यनीति अपनाना जटिल काम था। इस हालत में कांग्रेस ने युद्ध में ब्रिटेन को पूरा सहयोग देने का प्रस्ताव रखा बशर्ते केन्द्र में एक उत्तरदायी किस्म की सरकार तुरंत गठित कर दी जाए। जहां तक भविष्य का सवाल था, कांग्रेस ने एक संविधान सभा के गठन की मांग की, जो स्वतंत्र भारत का संविधान तैयार कर सके। इस तरह यह स्पष्ट है कि जो वर्ग इस समय अंग्रेज़ सरकार के ख़िलाफ़ आंदोलन खड़ा करने के पक्ष में था, उसे गांधीवादी नेतृत्व ने महत्व नहीं दिया। गांधीजी ने अंग्रेज़ों से सवाल किया, "क्या ग्रेट ब्रिटेन अनिच्छुक भारत को युद्ध में घसीटना चाहेगा या सच्चे लोकतंत्र की रक्षा के लिए अपने इच्छुक साथी का सहयोग पसंद करेगा?" गांधीजी ने कहा कांग्रेस के समर्थन का मतलब होगा कि उससे इंग्लैंड और फ्रांस दोनों का मनोबल बढ़ जायेगा।

हालांकि गांधी जी ने कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के सशर्त सहयोग के प्रस्ताव का समर्थन किया, मगर वे स्वयं इसके पक्ष में नहीं थे जैसा कि उन्होंने बाद में कहा, "मुझे अफ़सोस था कि अपने इस विचार में कि ब्रिटिश को जो भी सहयोग दिया जाए वह बिना शर्त दिया जाना चाहिए, मैं अकेला पड़ गया था। गांधीजी अपनी निजी हैसियत से, प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेज़ों के प्रति अपने रुख़ को बार-बार सामने ला रहे थे, यानी वे सहयोग की बात दोहरा रहे थे परंतु अब परिस्थितियां बदल चुकी थीं और अब निजी विचारों से ऊपर उठने का समय था। गांधीजी ने महसूस किया कि उनकी चुप्पी का दूरगामी अर्थ भारत और इंग्लैंड दोनों के लिए ही हानिकर सिद्ध हो सकता था। अतः उन्होंने कहा :

> "अगर अंग्रेज़ सभी की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं, तो उनके प्रतिनिधियों को स्पष्ट शब्दों में यह बात कहनी चाहिए कि युद्ध के लक्ष्य में भारत की स्वतंत्रता अनिवार्य रूप से शामिल है। इस स्वतंत्रता का मसौदा केवल भारतीयों द्वारा, और सिर्फ उन्हीं के द्वारा ही तय किया जा सकता है।"

सरकार ने क्या प्रतिक्रिया दिखाई? दरअसल अंग्रेज़ न तो तत्काल कोई छूट देने की स्थिति में थे और न भविष्य के लिए कोई वादा करने की स्थिति में वे, केवल डॉमिनियन स्टेटस देने की सरसरी बातचीत कर रहे थे। अंग्रेज़ सरकार के विरोध को रोकने और युद्ध की कार्रवाई में भारतीय संसाधनों के दोहन के लिए भारत रक्षा कानून (डिफेंस ऑफ़ इंडिया रूल्स) लागू कर दिए गए।

34.2.2 व्यक्तिगत सत्याग्रह

नागरिक अवज्ञा शुरू करने के मामले में कांग्रेस के दो मत थे। गांधीजी महसूस करते थे कि वातावरण नागरिक अवज्ञा के अनुकूल नहीं था क्योंकि कांग्रेस के अंदर मतभेद और अनुशासनहीनता की स्थिति बनी हुई थी। जो लोग नागरिक अवज्ञा की वकालत कर रहे थे वे गांधीजी को यह विश्वास दिलाना चाह रहे थे कि एक बार आंदोलन शुरू हो जाए तो मतभेद समाप्त हो जाएंगे और सभी इसकी सफलता के लिए काम करने लगेंगे। परंतु गांधीजी इस तर्क से सहमत नहीं थे। कांग्रेसी समाजवादी और अखिल भारतीय किसान सभा तुरंत आंदोलन शुरू करने के पक्ष में थे। एन.जी. रंगा ने तो यह सुझाव भी दिया कि किसान सभा को कांग्रेस से सबंध तोड़ लेने चाहिए और एक स्वतंत्र आंदोलन शुरू कर देना चाहिए। लेकिन किसी तरह पी. सुंदरैया ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया और इसी तरह के

वातावरण में मार्च 1940 में मौलाना आज़ाद के नेतृत्व में रामगढ़ का अधिवेशन हुआ। मौलाना ने कहा :

> "भारत नाज़ीवाद और फासीवाद की सम्भावनाओं को सहन नहीं कर सकता, परंतु वह इससे भी ज़्यादा ब्रिटिश साम्राज्यवाद से उकता गया है"

रामगढ़ कांग्रेस ने लोगों का आह्वान किया कि वे गांधीजी के नेतृत्व में शुरू होने वाले सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वयं को तैयार करें। लेकिन समाजवादी, साम्यवादी, किसान सभा और फ़ारवर्ड ब्लाक से संबंधित लोग इस प्रस्ताव से सहमत नहीं थे। उन्होंने रामगढ़ में एक समझौता-विरोधी सम्मेलन बुलाया। और सुभाषचंद्र बोस ने लोगों से आग्रह किया कि वे साम्राज्यवाद से समझौते का विरोध करें और कार्रवाई के लिए तैयार रहें। अगस्त 1940 में वाइसरॉय ने एक प्रस्ताव रखा जिसमें निम्न बातें शामिल थीं :

- गवर्नर जनरल की परिषद् का विस्तार जिसमें भारतीयों का प्रतिनिधित्व हो।
- युद्ध सलाहकार परिषद की स्थापना।

इस प्रस्ताव में उसने मुस्लिम लीग और अन्य अल्पसंख्यकों से वादा किया कि अंग्रेज़ सरकार भारत में ऐसे संविधान या सरकार पर कभी भी सहमत नहीं होगी जिसे उनका समर्थन प्राप्त न हो। (यहां हमें याद रखना चाहिए कि 1940 के अपने लाहौर अधिवेशन में मुस्लिम लीग पाकिस्तान की मांग रख चुकी थी) कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया क्योंकि :

1 इसमें राष्ट्रीय सरकार के लिए कोई सुझाव नहीं था,
2 इसमें मुस्लिम लीग जैसी कांग्रेस-विरोधी ताकतों को बढ़ावा दिया गया था।

सरकार योजना-बद्ध तरीकों से निवारक नज़रबंदी के तहत कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को गिरफ़्तार कर रही थी—विशेष रूप से उन्हें जो समाजवादी या वामपंथी रुझान वाले थे। सभी स्थानीय नेताओं पर निगरानी रखी जा रही थी। जब कि बहुत से मज़दूर नेताओं और युवकों को गिरफ़्तार कर लिया गया था।

जब गांधीजी को पक्का भरोसा हो गया कि अंग्रेज़ भारत में अपनी नीति में कोई सुधार नहीं करेंगे (गांधीजी ने सितम्बर 1940 में शिमला में वाइसरॉय के साथ लम्बी-लम्बी बैठकें कीं) तो उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू करने का फैसला किया। आंदोलन को व्यक्तिगत भागीदारी तक सीमित रखने का कारण यह था कि गांधीजी और कांग्रेस दोनों में से कोई भी यह नहीं चाहता था कि युद्ध के प्रयासों में बाधा डाली जाए, जबकि जन आंदोलन में ऐसा होना सम्भव नहीं था। यहां तक कि व्यक्तिगत सत्याग्रह का लक्ष्य भी सीमित था, यानी इस ब्रिटिश दावे को झुठलाना कि भारत पूरे मन से युद्ध की कार्रवाई में साथ दे रहा है।

17 अक्टूबर 1940 को आचार्य विनोबा भावे ने वर्धा के निकट एक गांव पवनार में युद्ध विरोधी भाषण देकर इस सत्याग्रह का उद्घाटन किया। इस काम के लिए गांधीजी ने भावे को निजी तौर पर चुना था। उनके दो अन्य नामज़द लोग वल्लभभाई और नेहरू सत्याग्रह शुरू करने से पहले ही गिरफ़्तार कर लिए गए। नवम्बर 1940 और फरवरी 1941 के मध्य बहुत से प्रमुख कांग्रेसजन जेल गए, लेकिन भागीदारी की सीमित प्रकृति और गांधी जी द्वारा कांग्रेसियों पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण यह आंदोलन अधिक कुछ हासिल नहीं कर सका। कुछ मामलों में कांग्रेसी भी बहुत ज़्यादा उत्सुक नहीं थे। उदाहरण के लिए बिहार में, सत्याग्रह के लिए चुने गए बहुत से कांग्रेसी अपने उन पदों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे जो वे नगरपालिकाओं में हासिल किए हुए थे। उन्होंने या तो गिरफ़्तारी देने से स्पष्ट इंकार कर दिया या फिर " गिरफ़्तारी देने के मामले में बहुत सख़्ती दिखाई (देखिए स्टीपन हैनिनगम की पुस्तक ("**पीजेंटस मूवमेंट इन कॉलोनिअल इंडिया**) दिसम्बर 1941 में कांग्रेस कार्यसमिति ने आंदोलन को स्थगित करने का फैसला किया। इस समय तक युद्ध ने एक नया मोड़ ले लिया था। ब्रिटेन की हार पर हार हो रही थी और जापानी फौजें दक्षिण-पूर्व एशिया को रौंद चुकी थीं। सोवियत संघ पर नाज़ियों का हमला हो चुका था और ब्रिटेन पर सोवियत संघ, अमरीका तथा चीन यह दवाब डाल रहे थे कि वह अपनी भारतीय नीति पर पुनर्विचार करें। सरकार ने अनेक राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया। जापान के हाथों रंगून के पतन के बाद अंग्रेज़ सरकार ने क्रिप्स कमीशन भारत भेजने का निर्णय किया।

बोध प्रश्न 1

1 युद्ध के प्रति भारतीयों के दृष्टिकोणों का लगभग दस पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2 निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही (✓) या गलत (×) है।

i) गांधीजी को अफसोस था कि एक मात्र वे ही ऐसे हैं जो युद्ध के दौरान ब्रिटिश को बिना शर्त सहयोग देना चाहते थे। ☐

ii) गांधी जी युद्ध प्रयासों के लिए ब्रिटेन को सशर्त समर्थन देने के लिए राज़ी हो गए। ☐

iii) भारत रक्षा कानून कांग्रेस के हितों की रक्षा के लिए थे। ☐

iv) कांग्रेस फासीवाद और नाज़ीवाद की विरोधी थी। ☐

v) कांग्रेस ने अगस्त प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। ☐

vi) व्यक्तिगत सत्याग्रह 1947 तक जारी रहा। ☐

3 खाली स्थान भरिये।

i) समाजवादी युद्ध के प्रयासों के (पक्ष/विरोध)..............में थे।

ii) गांधीजी ने कहा कि कांग्रेस के समर्थन का मतलब होगा (जर्मनी और जापान, इंग्लैंड और फ्रांस).............. का मनोबल (बढ़ जाएगा/घट जाएगा) ....।

iii) गांधी जी (महसूस करते थे/चाहते थे) .... कि वातावरण (सशस्त्र संघर्ष/नागरिक अवज्ञा) .... के अनुकूल नहीं है।

iv) सुभाषचंद्र बोस (रामगढ़/रामपुर) .... में कांग्रेस के प्रस्ताव पर (प्रसन्न/अप्रसन्न) ....थे।

v) आचार्य विनोबा भावे ने व्यक्तिगत सत्याग्रह (समाप्त/शुरू) .... किया।

34.3 भारत छोड़ो आंदोलन की ओर

युद्ध की प्रतिकूल परिस्थितियों और अंतर्राष्ट्रीय दवाबों ने अंग्रेज़ों को भारत के साथ एक सौहार्दपूर्ण समझौता करने और युद्ध में उसका संक्रिय सहयोग प्राप्त करने के लिए विवश कर दिया। सर स्ट्रैफोर्ड क्रिप्स कुछ प्रस्तावों के साथ भारत आये और उन्होंने विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के नेताओं के साथ बातचीत की।
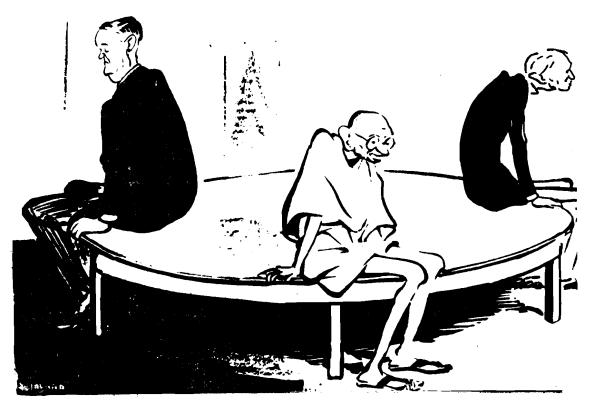
2. समझौते की बातचीत पर शंकर का एक कार्टून

34.3.1 क्रिप्स के प्रस्ताव

क्रिप्स के कुछ प्रस्ताव जो घोषणा पत्र के प्रारूप में शामिल थे, इस प्रकार थे :

- युद्ध समाप्त होने के तुरंत बाद भारत को, पृथक होने के अधिकार सहित, डोमिनियन स्टेटस दे दिया जाएगा।
- युद्ध समाप्त होने के तुरंत बाद एक संविधान निर्मात्री संस्था का गठन किया जाएगा। इसमें ब्रिटिश भारत और देशी रियासतों के प्रतिनिधि होंगे।
- इस तरह युद्धोपरांत बनाया गया संविधान अंग्रेज़ सरकार द्वारा इस शर्त के साथ स्वीकार कर लिया जाएगा कि कोई भी भारतीय प्रांत, यदि वह चाहे तो, भारतीय संघ से बाहर रह सकेगा और इस मसले पर ब्रिटेन से सीधी बातचीत कर सकेगा।
- रक्षा और सैनिक कार्रवाइयों का वास्तविक नियंत्रण अंग्रेज़ सरकार के पास रहेगा।

इस घोषणा पत्र को तकरीबन सभी भारतीय पार्टियों ने अस्वीकार कर दिया। कांग्रेस भविष्य के वादों पर भरोसा नहीं करना चाहती थी। वह पूर्ण अधिकारों सहित उत्तरदायी सरकार और देश की रक्षा पर नियंत्रण भी चाहती थी। गांधीजी ने प्रस्तावों की उपमा एक दिवालिया बैंक के नाम काटे गए उत्तर दिनांकित चेक से दी। मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य बनाये जाने के संबंध में अंग्रेज़ों द्वारा एक स्पष्ट घोषणा किये जाने की मांग की, और साथ ही अंतरिम सरकार में कांग्रेस के साथ मुस्लिम लीग के लिए 50 : 50 के आधार पर सीटों की मांग भी रखी। दलित वर्गों, सिक्खों, भारतीय, ईसाइयों और एंग्लो इंडियनों ने अपने-अपने समुदायों के लिए रक्षा उपायों की मांगें रखीं। इस तरह, क्रिप्स कमीशन भारतीयों को संतुष्ट करने में असफल रहा। ब्रिटेन ने यह सारा प्रयोग वास्तव में कोई ठोस काम करने के बजाय दुनिया को यह दिखाने के लिए ज्यादा किया था कि वह भारत की भावनाओं की चिंता करता है।

34.3.2 भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि

कांग्रेस को अपने भावी काम की दिशा जिन स्थितियों के चलते तय करनी [illegible]

- क्रिप्स मिशन की असफलता,

- जापानी सेना का भारत की सीमाओं तक आ पहुंचना,
- बढ़ती हुई कीमतें और खाद्य आपूर्ति की कमी, और
- कांग्रेस के अंदर अलग-अलग मत।

कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें भारत पर हमला करने वाली किसी भी विदेशी ताकत के साथ पूर्ण अहिंसक असहयोग करने का आह्वान किया गया (मई 1942)। राजगोपालाचारी और मद्रास के कुछ अन्य कांग्रेसियों ने एक प्रस्ताव पारित करवाने का प्रयास किया जिसमें कहा गया था कि अगर मद्रास सरकार उन्हें आमंत्रित करती है तो कांग्रेस को वहां मंत्रिमंडल का गठन करना चाहिए। इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया गया, परंतु इस प्रस्ताव ने यह ज़ाहिर कर दिया कि कुछ ऐसे कांग्रेसी थे जो सरकार के साथ सहयोग करना चाहते थे। राजगोपालाचारी एक स्वतंत्र रास्ता अपना रहे थे। वे पाकिस्तान की मांग का समर्थन कर चुके थे और कांग्रेस से आग्रह कर रहे थे कि वह युद्ध में सहयोग करें।

मई 1942 में गांधी जी ने बंबई में कांग्रेसियों की एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्होंने तय कर लिया है कि वे आदेशात्मक स्वर में अंग्रेज़ों से भारत छोड़ने के लिए कहेंगे। अगर अंग्रेज़ नहीं मानेंगे तो वे नागरिक अवज्ञा आंदोलन शुरू कर देंगे। इस आंदोलन को शुरू करने के बारे में बहुत से कांग्रेसी नेताओं के मन में संकोच था। नेहरू, विशेष रूप से दुविधा में थे कि साम्राज्यवादी ब्रिटेन से संघष करें या फासीवाद के विरुद्ध सघर्ष में सोवियत संघ और चीन का साथ न दें। आखिरकार नेहरू ने आंदोलन शुरू करने के पक्ष में फैसला किया। कांग्रेस ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत छोड़ो मांग का मतलब यह नहीं कि ब्रिटिश और मित्र राष्ट्रों की फौजें तुरंत ही भारत से चली जाएं। बल्कि इसका तात्पर्य था कि अंग्रेज़ों द्वारा भारत की स्वतंत्रता को तत्काल स्वीकृति प्रदान की जाए। 14 जुलाई को कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने "भारत छोड़ो" प्रस्ताव स्वीकार किया जिसकी पुष्टि अगस्त में बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में की जानी थी।

8 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने "भारत छोड़ो प्रस्ताव" पारित कर दिया। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों पर विस्तार से चर्चा करने के बाद, कांग्रेस ने भारत के लोगों से अपील की :

3. भारत छोड़ो आंदो[illegible]
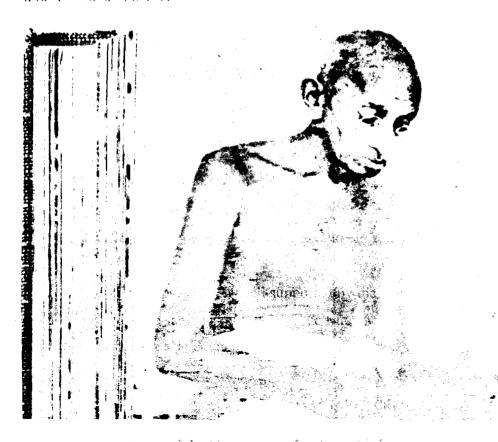
> उन्हें याद रखना चाहिए कि अहिंसा इस आंदोलन का आधार है। एक समय ऐसा आ सकता है कि जब लोगों के लिए निर्देश जारी करना, या निर्देश के लिए जनता तक पहुंचना सम्भव न हो, और जब कोई कांग्रेस कमेटी काम न कर सके। अगर ऐसा हो तो प्रत्येक स्त्री और पुरुष को जो इस आंदोलन में भाग ले रहा है, जारी किए गये सामान्य निर्देशों की चौहद्दी में रहकर स्वयं अपने अनुसार काम करना चाहिए।

गांधी जी ने अंग्रेज़ों से यहां से चले जाने और "भारत को भगवान भरोसे छोड़ने" के लिए कहा। उन्होंने सभी वर्गों को प्रोत्साहित किया कि वे आंदोलन में भाग लें, उन्होंने ज़ोर देकर कहा "प्रत्येक भारतीय को जो आज़ादी चाहता है और इसके लिए प्रयत्न करना चाहता है, अपना अगुआ स्वयं बनना चाहिए।" उनका संदेश था "करो या मरो" इस तरह "भारत छोड़ो आंदोलन" शुरू हो गया।

34.4 आंदोलन

कांग्रेस ने अंग्रेज़ों को निकाल बाहर करने का आह्वान तो किया लेकिन इसने पालन के लिए लोगों को कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं दिया। सरकार इस आंदोलन को कुचलने की तैयारियां कर रही थी। 9 अगस्त की सुबह गांधी जी सहित कांग्रेस के सभी प्रमुख नेता गिरफ़्तार कर लिए गए। नेताओं की गिरफ़्तारी ने लोगों को धक्का पहुंचाया और वे विरोध के लिए सड़कों पर निकले आये। के.जी. मशरूवाला ने, जो "हरिजन" के सम्पादक हो गये थे, विरोध की सम्भावित रूपरेखा के बारे में अपनी निजी राय प्रकाशित की :

> मेरी राय में, कार्यालायों, बैंकों, अन्न-भंडारों की लूटपाट या आगजनी उचित नहीं है। यातायात संचार व्यवस्था अहिंसक तरीके से और जीवन को खतरे में डाले बिना भंग करना उचित है। हड़तालों का आयोजन करना सर्वश्रेष्ठ है...........तार काटना, पटरी उखाड़ना, छोटे पुलों को नष्ट करना आदि को इस प्रकार के संघर्ष में अनुचित नहीं ठहराया जा सकता, बशर्ते कि जीवन की सुरक्षा की अत्यधिक सावधानी बरती जाए।

मशरूवाला ने कहा, "गांधीजी और कांग्रेस ने, अंग्रेज़ और भारतीय राष्ट्रों के बीच फिर से सद्भाव पैदा होने की सभी उम्मीदें नहीं छोड़ दी हैं, यदि प्रयास राष्ट्रीय इच्छा को प्रकट करने के लिए काफ़ी शक्तिशाली है, तो आत्मसंयम कभी भी हमारे विरुद्ध नहीं जाएगा"

अब हम इस आंदोलन के प्रसार और विभिन्न वर्गों पर इसके प्रभाव की थोड़ी चर्चा करें।

34.4.1 आंदोलन का प्रसार

9 अगस्त को अपनी गिरफ़्तारी से पूर्व गांधी जी ने देश के नाम निम्न संदेश दिया था :

> प्रत्येक व्यक्ति इसके लिए स्वतंत्र है कि वह हड़ताल तथा अन्य अहिंसक साधनों से गतिरोध पूरा करने के लिए अहिंसा के अंतर्गत, अपनी आख़िरी हदों तक काम करे। सत्याग्रहियों को जीवन के लिए नहीं बल्कि मृत्यु के लिए बाहर निकलना है। उन्हें मृत्यु का सामना करना है, उसे गले लगाना है। जब प्रत्येक व्यक्ति करेंगे या मरेंगे की भावना के साथ बलिदान के लिए निकलेगा तभी देश जीवित रहेगा।

लेकिन यह संदेश देने के साथ गांधीजी ने एक बार फिर अहिंसा पर बल दिया:

> स्वतंत्रता के प्रत्येक अहिंसक सेनानी को "करेंगे या मरेंगे" का नारा एक कागज़ या कपड़े के टुकड़े पर लिखना चाहिए और उसे अपने कपड़ों पर चिपकाना चाहिए ताकि सत्याग्रह के दौरान अगर उसकी मृत्यु हो जाए तो उसे उन दूसरे तत्वों से अलग किया जा सके जो अहिंसा का समर्थन नहीं करते।

गांधीजी और उनके साथ अन्य कांग्रेसी नेताओं की गिरफ़्तारी पर देश के विभिन्न भागों में अभूतपूर्व जन-प्रतिक्रिया हुई। शहरों और कस्बों में हड़तालों, जुलूस और प्रदर्शनों का सिलसिला शुरू हो गया। हालांकि आह्वान कांग्रेसी नेतृत्व का था, परंतु वास्तव में आंदोलन जनता ने शुरू किया। चूंकि राष्ट्रीय, प्रांतीय और स्थानीय स्तर के सभी मान्य नेता

गिरफ़्तार कर लिए गए थे इसलिए इनकी जगह भरने के लिए उनके क्षेत्रों में स्थानीय स्तरों पर युवा और उग्र, विशेषरूप से समाजवादी रुझान वाले छात्र नेता उभर कर आए।

प्रारंभिक चरणों में आंदोलन अहिंसा की सीमाओं में रहा। पर सरकार की दमनकारी नीति ने लोगों को हिंसा के लिए उकसाया। अहिंसक संघर्ष का गांधीजी का संदेश पृष्टभूमि में चला गया और लोगों ने संघर्ष को अपने-अपने तरीके ईजाद क़र लिए। इनमें ये कदम शामिल थे :

- सरकारी इमारतों, पुलिस थानों और डाकघरों पर हमले,
- रेलवे स्टेशनों पर हमले, और रेल की पटरियों को उखाड़ना,
- टेलीग्राफ, टेलीफोन और बिजली के तारों को काटना,
- पुलों को नष्ट करके सड़क यातायात भंग करना, और
- मज़दूरों की हड़ताल आदि।

इनमें से अधिकांश कार्रवाइयां सेना और पुलिस की गतिविधि को राकेने के लिए थीं, जिनका इस्तेमाल सरकार आंदोलन को कुचलने के लिए कर रही थी। कई क्षेत्रों में सरकार का कोई नियंत्रण नहीं रह गया और यहां स्थानीय जनता ने ''स्वराज'' क़ायम कर दिया। कुछ उदाहरण दिये जा सकते हैं।
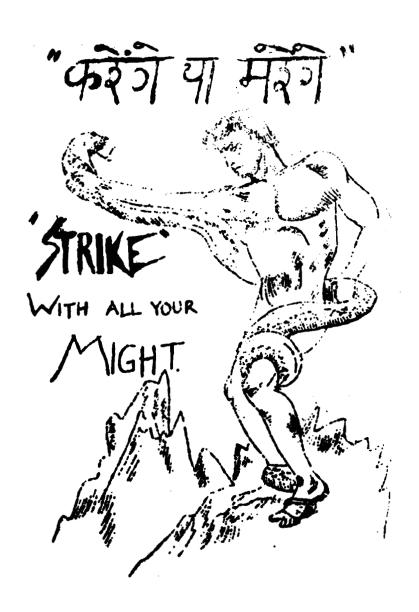
4. भारत छोड़ो आन्दोलन का एक पोस्टर

- महाराष्ट्र में, सतारा में एक समानान्तर सरकार स्थापित कर दी गयी जो लम्बे समय तक चलती रही।
- बंगाल में, तामलुक जातीय सरकार मिदनापुर ज़िले में काफ़ी समय तक काम करती रही। इस राष्ट्रीय सरकार के पास क़ानून और व्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि आदि विभागों के साथ-साथ अपनी डाक व्यवस्था तथा विवाचन (Arbitration) अदालतें भी थीं।
- उड़ीसा में तलचर (Talacher) में लोगों ने स्वराज स्थापित किया।
- पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के कई भागों में (आज़मगढ़, बलिया, गाज़ीपुर, मुंगेर, मुज़फ्फरपुर इत्यादि) लोगों ने पुलिस थानों पर कब्ज़ा कर लिया और सरकारी सत्ता को उखाड़ फेंका।

प्रारम्भ में यह आंदोलन शहरी इलाकों में ही प्रभावी था, परंतु शीघ्र ही इसका प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में भी हो गया जहां विद्रोह का झंडा लम्बे समय तक ऊंचा उठा रहा। बम्बई, आंध्र, यू.पी., बिहार, गुजरात, उड़ीसा, असम, बंगाल, कर्नाटक आदि में आंदोलन को जनता का व्यापक समर्थन मिला। लेकिन पंजाब, सिंध, उत्तर पश्चिम सीमाप्रांत में आंदोलन का प्रभाव कम था।

34.4.2 प्रतिक्रियाएं और प्रवृत्तियां

"भारत छोड़ो" और "करो या मरो" उस समय के प्रमुख नारे थे, परंतु आंदोलन के प्रति जनता ने कई रूपों में अपनी सक्रियता दिखायी, श्रमिक वर्ग ने कई औद्योगिक केन्द्रों में हड़तालें कीं। इन में से कुछ प्रमुख केन्द्र थे—बम्बई, कानपुर, अहमदाबाद, जमशेदपुर और पूना। दिल्ली में 9 अगस्त की हड़ताल मज़दूरों के सड़क पर निकल आने का परिणाम थी। लेकिन अहमदाबाद को छोड़कर, जहां हड़ताल तीन महीने चली, अन्य जगहों पर हड़ताल ज़्यादा दिन नहीं चली।

बिहार में व्यापक जन कार्रवाइयों के परिणामस्वरूप पटना शेष इलाके से कट गया, और उत्तरी क्षेत्र में, बेगूसराय के उपमंडल (सब डिवीज़न) अधिकारी ने रिपोर्ट दी:

> .... स्कूली विद्यार्थियों ने आंदोलन शुरू किया, कांग्रेस के सभी वर्गों के कार्यकर्त्ता उनके साथ शामिल हो गए। कांग्रेस के नरम वर्ग ने आंदोलन को नियंत्रण में रखने का प्रयास किया, लेकिन जब उन्होंने ग्रामीण जनता को आंदोलन में शामिल किया त. यह एक आर्थिक प्रश्न बन गया, विशाल सम्पत्तियों, ख़ासकर रेलवे स्टेशनों पर पड़े अनाज ने उन्हें आकर्षित किया......... गरीब मज़दूरों ने लूट में आगे बढ़कर हिस्सा लिया। दूरस्थ स्टेशनों पर व्यापारी वर्ग कांग्रेस की दया पर निर्भर था।........नरम वर्ग ने यह सब पसंद नहीं किया, परंतु उस समय उनका कोई नियंत्रण नहीं था।

इससे आंदोलन में ग्रामीण जनता की भागीदारी और गांधीवादी नेताओं (नरम वर्ग के रूप में वर्णित) की, आंदोलन को निर्देशित करने की मजबूरियों का पता चलता है। इसी तरह के हालात पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी थे। आज़मगढ़ ज़िले के मधुबन थाने में जो कुछ हुआ, उसके आर.एच. निबलेट द्वारा रखे गए लेखे-जोखे से इस क्षेत्र में जनता के विद्रोह की भयानकता का आभास होता है। निबलेट ने उल्लेख किया है कि किस प्रकार योजनाबद्ध तरीके से पुलिस स्टेशन पर तीन ओर से हमला किया गया। एक ओर से चलने वाले लोग जल्दी पहुंच गए तो उन्होंने दूसरी ओर से आने वाले लोगों की एक निश्चित फ़ासले पर खड़े होकर प्रतीक्षा की। पुलिस ने हमले को रोकने के लिए 119 चक्र गोलियां चलायीं। हमला करीब दो घंटे तक चला।

उड़ीसा में तलचर (Talacher) कस्बे की ओर बढ़ते हुए किसान गुरिल्लों को रोकने के लिए हवाई जहाज़ों का प्रयोग किया गया। महाराष्ट्र में सतारा क्षेत्र में लम्बी मुठभेड़ें चलीं।

व्यापक जन कार्रवाई के अलावा आंदोलन में एक और प्रवृत्ति उभर कर आयी। प्रवृत्ति थी भूमिगत, क्रांतिकारी कार्रवाई की। 9 नवम्बर 1942 को जयप्रकाश नारायण और रामानंद मिश्रा हज़ारीबाग जेल से भाग निकले। उन्होंने नेपाल सीमा से लगे क्षेत्रों से भूमिगत आंदोलन का संचालन किया।

क्रान्तिकारी

वर्ष १ ले | संस्थापक—अच्युत पटवर्धन | ऑक्टो.-नोव्हें.
अंक ६-७ | एस्. एम्. जोशी | १९४३

—'मला संपूर्ण स्वातंत्र्य पाहिजे'—

"मंत्रिमंडळे किंवा अशाच प्रकारच्या कोणत्याहि बाबतीत व्हाइसरॉयशी सौदा करण्यासाठी मी आता पुढारीन, नाही हें आपण लक्षांत ठेवावें. संपूर्ण स्वातंत्र्या व्यतिरिक्त दुसऱ्या कोणत्याहि गोष्टीनें माझें समाधान होणार नाही. मिठावरील कराची माफी, दारूबंदी इत्यादि प्रकारच्या अनेक योजना कदाचित् व्हाइसरॉय पुढें करतील. पण, मी स्पष्ट सांगणार आहे, 'मला त्यातील काहींच नको, संपूर्ण स्वातंत्र्य पाहिजे.'....मी आपणास एक लहानसा मंत्र देणार आहे. तो प्रत्येकानें आपल्या हृदयावर कोरून ठेवावा. हा मंत्र म्हणजे: 'करूं किंवा मरूं' आपण हिंदुस्थानला स्वतंत्र करूं किंवा त्या प्रयत्नात स्वतःचे बलिदान देऊं. पारतंत्र्यात जिवंत राहण्यापेक्षा स्वातंत्र्यासाठी आत्माहुति देण्याच्या ठाम निर्धारानें प्रत्येक स्त्री व पुरुषानें या लढ्यात उडी घेतली पाहिजे."

—महात्मा गांधी

[ता. ८ ऑगस्ट १९४२ रोजी अ. भा. समितिपुढे केलेले भाषण]

करेंगे या मरेंगे।

करेंगे या मरेंगे

नं. ४
१-९-४२

'कार्यक्रम पाहिजे ना? हा घ्या कार्यक्रम'

संपादक:— आपला जिवलग.

विद्यार्थ्यांनो, कार्यक्रम पाहिजे ना? परकीय सत्तेला गांधीजींनी दिलेला 'Quit India' 'हिंदुस्थानांतून गाशा गुंडाळ' इशारा नीट मनन करा; म्हणजे आपल्याला कार्यक्रम सुचेल. उच्चार-आचारामध्यें मनःपूर्वक अहिंसा पाळा, म्हणजे जय हा तुमचाच ठरलेला आहे. ही दृष्टी आपलीशी करा. म्हणजे कार्यक्रम आपले आपल्यालाच सुचतील. मी कांहीं कार्यक्रम सहज दिग्दर्शनार्थ येथें सुचवितो.

१ कॉंग्रेस व महात्माजी, किंवा दरिद्रनारायण व महात्माजी यांच्या मधील दळणवळण या परकीय सरकारानें तोडून टाकले आहे. तेव्हां परकीय सत्तेचे दळणवळण हें आपण पूर्णपणें तोडून टाकलें पाहिजे. मात्र त्यांत कोणाच्या जिवाला धक्का पोहोचता कामा नये हें ध्यानांत ठेवा.

२ सरकारी नोकरांना त्यांच्या त्यांच्या घरीं जाऊन त्यांना राष्ट्राच्या व महात्माजींच्या हाकेला 'ओ' देण्यास विनवा. सरकारी नोकरांच्या मुलांनी त्यांचे वडील राजीनामा देईपर्यंत घरीं उपवास—सत्याग्रह करून आपापल्या वडलांना राष्ट्रीय महापापा पासून वाचवावें.

३ बुलेटिन लिहिणें, छापणें, वाटणें वगैरे कार्यक्रम कोणीही विद्यार्थी करूं शकेल. ही कामे उघड झाली पाहिजेत

४ रोज कोणत्या तरी रस्त्यात मीटिंग भरून, तेथें 'करेंगे या मरेंगे' हें नवीन सूत्र घरोघर पोहोंचवा; व आपल्या छातीवर ते नेहमीं धारण करा. स्वतंत्र होण्याचा किंवा होण्याच्या प्रयत्नांत मरण्याचा आपला निर्धार झालेला जाहीर करण्यासाठीं हे सूत्र अत्यंत उपयुक्त आहे.

५ बेकायदा मीठ येथें आणून बेळगांव मध्यें आणवून ते रोज विकण्याचा व विकविण्याचा कायदेभंग करा.

६ आपल्या देशांतील परसत्ता नष्ट करावयाची आहे. हे उद्दिष्ट आपल्या डोळ्यापुढे ठेवून आपल्याला इतर जे कार्यक्रम सुचतील ते सर्व अमलांत आणावेत.

एवढे कार्यक्रम अमलांत आणा. मग पुनः अधिक मांगेन. पण एवढें ध्यानांत ठेवा कीं, तुमच्या कोणत्याही कार्यक्रमांत 'गुप्तता' ठेऊं नका.

स्वतंत्र भारत ईश्वरा शिवाय कोणासही भिणार नाहीं.

ऑल इंडिया कॉंग्रेस कमिटी

खाली दिलेली स्वातंत्र्यदिनाची प्रतिज्ञा ता. २६ जानेवारी १९४२ रोजीं सर्वत्र सार्वजनिक वा खाजगी रीत्या उच्चारण्यांत यावी.

प्रतिज्ञा

"जगांतील कोणत्याहि जनतेप्रमाणें हिंदी जनतेसहि स्वातंत्र्याचा जन्मसिद्ध हक्क आहे, असा आमचा विश्वास आहे. त्याशिवाय आपल्या श्रमाचें फळ उपभोगण्याची, जीवनास आवश्यक अशा गोष्टी मिळण्याची अगर सर्वांगीण प्रगति होण्याची शक्यता दिसत नाहीं. आमची अशीहि पक्की समजूत आहे कीं, जर एखाद्या राजवटीनें जनतेचे हक्क नष्ट केले व जुलूम सुरू केला तर तिच्यांत क्रांति घडवून आणण्याचा वा ती जुलमी राजवट नष्ट करण्याचा त्या जनतेस हक्क आहे. ब्रिटिश सत्ता हिंदी जनतेचें फक्त स्वातंत्र्यच हिरावून थांबली नाहीं तर जनतेच्या पिळणुकीवरच तिनें आपलें अधिष्ठान ठेवलें आहे. हिंदुस्थानचा आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक व आत्मिक अधःपात करणें हेंच तिचें धोरण आहे. आम्हांस असें मनापासून वाटतें कीं, ब्रिटिशांचे सर्व संबंध तोडून पूर्ण स्वराज्य मिळवल्याशिवाय तरणोपाय नाहीं.

आपलें स्वातंत्र्य मिळण्याचा हमखास उपाय हिंसात्मक नाहीं हें आम्हांस पक्कें ठाऊक आहे. आतांपर्यंत हिंदुस्थाननें मिळवलेलें सामर्थ्य

स्वतंत्र महाराष्ट्र

महाराष्ट्र प्रांतिक कॉंग्रेस कमिटीची अधिकृत पत्रिका

क्रमांक ३३ वा] पुणें — शनिवार तारीख २० माहे फेब्रुवारी सन १९४३ इसवी [कि. ०॥ आणा

चोरांच्या उलट्या बोंबा

[illegible]

ब्रिटिशाच्या हिंसेची यादी पाहिजे का?

[illegible]

हे कसले कायदेशीर सरकार! हे सरकार बेकायदा व राक्षसी आहे

[illegible]

मागचें कशाला? आज काल हिंदुस्थानांत काय चालले आहे?

[illegible]

5. भारत छोड़ो आन्दोलन पर महाराष्ट्र में जारी किये गये पैम्फलेट

6. कांग्रेस रेडियो के यंत्र

इसी प्रकार बंबई में, अरुणा आसिफ़ अली जैसी नेता के नेतृत्व में समाजवादी नेताओं ने अपनी भूमिगत गतिविधियां जारी रखीं। भूमिगत आंदोलन की सबसे साहसपूर्ण कार्रवाई कांग्रेस रेडियो की स्थापना थी, जिसकी उद्घोषिका उषा मेहता थी। यह रेडियो लम्बे समय तक सक्रिय रहा। सुभाषचंद्र बोस ने बर्लिन रेडियो पर बोलते हुए (31 अगस्त, 1942) इस आंदोलन को "अहिंसक गुरिल्ला युद्ध" कहा। उन्होंने सुझाव दिया कि :

> इस अहिंसक गुरिल्ला अभियान का लक्ष्य दुहरा होना चाहिए। पहला, भारत में युद्ध उत्पादनों को नष्ट करना, और दूसरा, देश में अंग्रेज़ प्रशासन को ठप्प करना। इन लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए भारत के सभी वर्गों को इस संघर्ष में भाग लेना चाहिए।

आंदोलन में छात्रों ने व्यापक रूप से भाग लिया। वे देहात में फैल गए और वहाँ ग्रामीणों को दिशा निर्देश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। आंदोलन को व्यापारी-वर्ग का ज़्यादा समर्थन नहीं मिला। वास्तव में अधिकांश पूंजीपतियों और व्यापारियों ने युद्ध के दौरान भारी मुनाफ़ा कमाया था। कुछ मामलों में, पूंजीपतियों ने सरकार से (फिक्की-फेडरेशन ऑफ़ इंडियन चैम्बर्स ऑफ़ कामर्स एंड इंडस्ट्री के माध्यम से) गांधीजी और अन्य नेताओं को रिहा करने का आग्रह किया। लेकिन उनका तर्क था कि अकेले गांधीजी ही सरकारी सम्पत्तियों पर हो रहे हमलों को रोक सकते हैं। वे चिंतित थे कि इस तरह के हमले अगर जारी रहे तो वे निजी संपत्ति पर हमले के रूप में बदल सकते हैं। मुस्लिम लीग ने स्वयं को इस आंदोलन से दूर रखा। इस दौरान साम्प्रदायिक दंगों की घटनाओं के समाचार भी नहीं मिले। हिंदू महासभा ने आंदोलन की आलोचना की। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी "जन युद्ध की नीति" के कारण आंदोलन का समर्थन नहीं किया। राजा और ज़मींदार युद्ध प्रयासों का समर्थन कर रहे थे। आंदोलन के साथ उनकी कोई सहानुभूति नहीं थी। राजगोपालाचारी जैसे भी कुछ कांग्रेसी नेता थे जिन्होंने आंदोलन में भाग नहीं लिया और जिन्होंने युद्ध प्रयासों का समर्थन किया।

इस सबके बावजूद आंदोलन की तीव्रता निम्न आंकड़ों से मापी जा सकती है :

- यू.पी. में एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 104 रेलवे स्टेशनों पर हमला किया गया और क्षति पहुँचायी गयी। लगभग 100 घटनाएं रेलपटरियों की तोड़-फोड़ की हुईं। टेलीफोन और टेलीग्राफ तार काटने के 425 मामले हुए। डाकघरों को क्षति पहुंचाने की 119 घटनाएं हुईं।

7. बर्लिन रेडियो पर बोलते हुए सुभाषचन्द्र बोस

- मिदनापुर में 43 सरकारी इमारतों को आग लगायी गई।
- बिहार में 72 पुलिस थानों पर हमले हुए, 332 रेलवे स्टेशनों, 945 डाकघरों को क्षति पहुंचायी गयी।
- देश भर में 664 बम विस्फोट हुए।

इस व्यापक जन-लहर की सरकार पर क्या प्रतिक्रिया हुई? इस सवाल की चर्चा हम आगामी भाग में करेंगे।

34.4.3 दमन

व्यापक जन आंदोलन को कुचलने के लिए सरकार ने अपनी सारी ताकत लगा दी थी। गिरफ़्तारियों, नज़रबंदियां, पुलिस गोली चालन, कांग्रेस कार्यालयों को आग लगाना, आदि वे तरीके थे जो सरकार ने अपनाये।

- 1942 के अंत तक अकेले यू.पी. में 16,089 लोग गिरफ़्तार किये गए। सारे भारत में 1943 के अंत तक गिरफ़्तारियों का सरकारी आंकड़ा 91,836 था।
- सितम्बर 1942 तक पुलिस गोली चालन में मारे गए लोगों की संख्या 658 थी, और 1943 तक यह संख्या 1060 हो गई थी। लेकिन ये सरकारी आंकड़े थे। वस्तुतः इससे कहीं अधिक लोग मरे थे और बहुत से घायल हुए थे।
- अकेले मिदनापुर में सरकारी बलों ने 31 कांग्रेस शिविरों और 164 निजी घरों को आग लगायी थी। बलात्कार के 74 मामले हुए। इनमें से 46 पुलिस द्वारा एक ही दिन में एक ही गांव में 9 जनवरी 1943 को किये गये थे।

- सरकार ने 5 स्थानों पर लोगों पर गोली चलाने के लिए हवाई जहाज़ों के प्रयोग की बात स्वीकार की। ये स्थान थे पटना के निकट गिरिक (Giriak) भागलपुर ज़िला, नाडिया ज़िले में रामाघाट, मुंगेर जिला, तलचर (Talacher) शहर के निकट।
- लाठीचार्ज, कोड़े मारने, बंदी बनाने की अनगिनत घटनाएं हुईं।
- आंदोलन प्रभावित क्षेत्रों के निवासियों से सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया। उदाहरण के लिए यू.पी. में इस तरह के जुर्माने की कुल धनराशि 28,32,000 रुपए थी, और फ़रवरी 1943 तक 25,00,000 रुपए वसूल कर लिये गए थे। इसी प्रकार उत्तरी बिहार में फ़रवरी 1943 तक रु. 34,15,529 का जुर्माना किया जा चुका था, जिसमें से रु० 28,35,025 वसूल कर लिये गये थे।

इस प्रकार के दमनकारी तरीकों से ही अंग्रेज़ ख़ुद को फिर से जमाने में सफल हो गये। युद्ध की स्थिति ने दो तरह से उनकी मदद की :

i) उनके हाथ में विशाल सैन्य शक्ति थी, जो भारत में जापानी हमले के मुक़ाबले के लिए रखी गई थी, परंतु इस शक्ति का उपयोग आंदोलन को कुचलने में किया गया।

ii) युद्धकालीन सेंसर स्थिति का लाभ उठाकर उन्होंने आंदोलन को निर्मम ढंग से दबा दिया। उन्हें अपने इन दमकारी तरीकों के लिए न तो किसी आंतरिक (घरेलू)आलोचना की चिंता करनी थी, और न विश्व जनमत की। मित्र राष्ट्र, धुरी राष्ट्रों के साथ युद्ध में उलझे थे, उनके पास यह चिंता करने का समय नहीं था कि अंग्रेज़ भारत में क्या कर रहे थे।

देशका अपना दैनिक। जनताका सच्चा सैनिक॥

संख्या १४]

देशद्रोहियोंका बहिष्कार करो !

सत्यनारायण पार्कमें झण्डा-वंदन

सत्यनारायण पार्कमें झण्डा-वंदन

अहमदाबादमें विद्यार्थियोंके जुलूस पर गोली

8. देश द्रोहियों का बहिष्कार करने की मांग करता हुआ एक पैम्फलेट

भारत छोड़ो आंदोलन असफल हो गया। परंतु इसने अंग्रेज़ राज से छुटकारा पाने के लिए जनता के दृढ़ इरादे को बख़ूबी ज़ाहिर कर दिया। कांग्रेसी नेतृत्व ने अहिंसा के सिद्धांत से हटने के लिए लोगों की आलोचना नहीं की लेकिन साथ ही लोगों के किसी भी हिंसक कृत्य के लिए ज़िम्मेदारी लेने से इंकार कर दिया।

बोध प्रश्न 2

1 निम्न में से कौन से कथन सही (✓) या गलत (×) हैं।

i) गांधीजी भारत छोड़ो आंदोलन में जनता के सीमित वर्गों की ही भागीदारी चाहते थे। ☐

ii) भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व उग्र युवकों और समाजवादियों के हाथों में चला गया। ☐

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कोई समानान्तर सरकार स्थापित नहीं हुई। ☐

iv) कांग्रेस के नरम वर्ग ने आंदोलन को नियंत्रित करने का प्रयास किया, परंतु असफल रहा। ☐

v) आंदोलन के दौरान कोई भूमिगत कार्रवाई नहीं चली। ☐

vi) भारत छोड़ो आंदोलन में पूंजीपतियों और व्यापारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। ☐

2. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए लोगों द्वारा अपनाये गये तरीकों का करीब दस पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3 व्यापक जन आंदोलन को कुचलने के लिए अंग्रेज़ों द्वारा अपनाये गए तरीकों का करीब दस पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

34.5 आज़ाद हिंद फ़ौज (इंडियन नेशनल आर्मी)

"भारत छोड़ो आंदोलन" अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ वह संघर्ष था जो भारत में किया गया परंतु समान रूप से महत्वपूर्ण उस आज़ाद हिंद फ़ौज की भूमिका भी है जिसने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ अपनी लड़ाई विदेश की धरती से लड़ी।

9. आज़ाद हिन्द फ़ौज का निरीक्षण करते हुए रास बिहारी बोस तथा मोहन सिंह

34.5.1 आज़ाद हिंद फौज़ का निर्माण

बहुत से ऐसे क्रांतिकारी थे जो देश के लिए विदेशों में रहकर काम कर रहे थे। इनमें से एक रास बिहारी बोस भी थे जो अंग्रेज़ सरकार की गिरफ़्त से बचने के लिए 1915 से जापान में फ़रारी जीवन जी रहे थे। उन्होंने युद्ध द्वारा प्रदान किये गये अवसर का लाभ उठाकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ सशस्त्र संघर्ष चलाने के लिए भारतीयों को संगठित किया। बहुत से ऐसे भारतीय सैनिक थे जो अंग्रेज़ों की ओर से लड़ रहे थे। जापानियों ने दक्षिण-पूर्व एशिया में अंग्रेज़ों को हटाने के बाद, बहुत से भारतीय सैनिक को युद्धबंदी बना लिया। एक जापानी सैनिक अधिकारी मेजर फ़ूजीवारा (Fujiwara) ने एक युद्धबंदी कैप्टन मोहन सिंह को समझाया कि वह भारत की स्वतंत्रता के लिए जापानियों के साथ मिलकर काम करें। मार्च 1942 में टोक्यो में भारतीयों की एक कान्फ्रेंस बुलायी गयी और उन्होंने "इंडियन इंडिपेंडेंस लीग" की स्थापना की। इसके बाद बैंकाक में (जून 1942) एक कान्फ्रेंस हुई जिसमें रास बिहारी बोस को लीग का अध्यक्ष चुना गया, और यहीं इंडियन नेशनल आर्मी (आज़ाद हिंद फ़ौज) के गठन का निर्णय लिया गया। कैप्टन मोहन सिंह को आज़ाद हिंद फ़ौज का कमांडर नियुक्त किया गया। अब तक फ़ौज में 40,000 भारतीय सैनिक आ चुके थे। इस सम्मेलन ने नवगठित सैन्य आंदोलन के नेतृत्व के लिए सुभाषचंद्र बोस को आमंत्रित किया।

10. कलकत्ता का वह घर जहाँ से बोस फ़रार हुए थे।

सुभाषचंद्र बोस भारत से बच निकल कर 1941 में बर्लिन पहुंच गए थे। जून 1943 में वे टोक्यो आये और फिर जुलाई में सिंगापुर में वे आज़ाद हिंद फौज में शामिल हो गए। रास बिहारी बोस ने नेतृत्व सुभाषचंद्र बोस को सौंप दिया और एक आज़ाद हिन्द सरकार का गठन किया गया। नवम्बर 1943 में जापानियों ने अंडमान और निक्कोबार द्वीप समूह का प्रशासन आज़ाद हिन्द फौज को सौंपने के अपने निर्णय की घोषणा की। इस तरह भारत की स्वतंत्रता के लिए आज़ाद हिंद फौज के साहसिक संघर्ष की शुरुआत हुई।

11. युद्ध क्षेत्र में जाने को तैयार आज़ाद हिन्द फौज के सिपाही

34.5.2 आज़ाद हिंद फ़ौज की कार्रवाइयां

आज़ाद हिंद फ़ौज ने कुछ ही महीनों में तीन लड़ाकू ब्रिगेडें खड़ी कर लीं, जिनके नाम

गांधी, आज़ाद, और नेहरू के नाम पर रखे गये। शीघ्र ही अन्य ब्रिगेडों का भी गठन किया गया जिनके नाम सुभाष बिग्रेड और रानी झांसी ब्रिगेड रखे गये। समुद्रपार रहने वाले भारतीयों ने धन और सामग्री के मामले में आज़ाद हिंद फ़ौज को खुलकर सहयोग दिया। आज़ाद हिंद फ़ौज के नारे थे "जयहिंद" और "दिल्ली चलो"। सबसे अधिक प्रसिद्ध सुभाष की वह घोषणा थी जिसमें उन्होंने कहा "तुम मुझे ख़ून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।" जापानी फौज़ों के साथ-साथ लड़ते हुए आज़ाद हिंद फ़ौज ने 18 मार्च, 1944 को भारतीय सीमा पार कर ली। भारतीय भूमि पर तिरंगा फहरा दिया गया। फिर भी आज़ाद हिंद फ़ौज इम्फाल पर कब्ज़ा करने में असफल रही। इसके दो कारण थे :

i) आज़ाद हिंद फ़ौज को जापानियों से पर्याप्त रसद और हवाई सुरक्षा प्राप्त नहीं हुई।
ii) मानसून ने उसके आगे बढ़ने में रुकावट पैदा की।

12. सुभाष चन्द्र बोस आज़ाद हिंद फ़ौज की महिला टुकड़ी रानी झांसी ब्रिगेड का निरीक्षण करते हुए

इस बीच अंग्रेज़ अपनी सेनाओं को फिर से तैयार करने में सफल हो गये और उन्होंने जवाबी हमले किए। आज़ाद हिंद फ़ौज ने भारी जन-हानि की क़ीमत पर साहसिक लड़ाई लड़ी। लेकिन युद्ध का रुख़ बदल रहा था। जर्मनी के पतन और जापानी सेनाओं की भारी क्षति के बाद आज़ाद हिंद फ़ौज अपने बल पर टिकी नहीं रह सकी। सुभाषचंद्र बोस लापता हो गये। कुछ लोगों का विश्वास था कि हवाई दुर्घटना में उनका निधन हो गया, परंतु अन्य लोगों ने इस पर विश्वास करने से इंकार किया।

34.5.3 प्रभाव

आज़ाद हिंद फ़ौज अपनी लक्ष्य प्राप्त करने में सफ़ल नहीं हुई, परंतु इसने स्वतंत्रता संघर्ष को अत्यधिक प्रभावित किया :

i) अंग्रेज़ों के सामने यह साफ़ हो गया कि वे भारतीय सैनिकों की वफ़ादारी पर और ज़्यादा भरोसा नहीं कर सकते और उन्हें भाड़े का सिपाही मानकर भी नहीं चल सकते।
ii) आज़ाद हिंद फ़ौज के संघर्ष ने दिखा दिया कि जिन लोगों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ़ सशस्त्र संघर्ष किया था वे किसी भी तरह साम्प्रदायिक विभाजन से प्रभावित नहीं थे। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सभी आज़ाद हिंद फ़ौज में थे जो सिर्फ़ भारतीयों के रूप में लड़े थे।
iii) रानी झांसी ब्रिगेड ने जो सिर्फ़ महिलाओं की ब्रिगेड थी, अंग्रेज़ों के खिलाफ़ सशस्त्र संघर्ष चलाने में भारतीय महिलाओं की क्षमताओं को सामने ला दिया।

iv) आज़ाद हिंद फ़ौज ने समुद्रपार रहने वाले भारतीयों की अपनी मातृभूमि की आज़ादी के प्रति चिंता और उत्साह को भी सामने ला दिया।

इस दौर में सुभाषचंद्र बोस की भूमिका पर विचार करते समय हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना पड़ेगा कि उन्होंने जो कुछ किया वह फासीवादी जर्मनी या विस्तारवादी जापान को प्राप्त उनके समर्थन के कारण नहीं था, बल्कि भारत की आज़ादी के लिए वे आज़ाद हिंद फ़ौज की स्वतंत्र सत्ता बनाये रखने के इरादे पर दृढ़ थे। जब वे बर्लिन में थे तो भारतीय फ़ौजियों के सोवियत संघ के विरुद्ध इस्तेमाल के सवाल पर जर्मनों के साथ उनका विवाद हो गया था।

अंग्रेज़ सरकार ने आज़ाद हिंद फ़ौज के अधिकारियों और सैनिकों पर फ़ौजी अदालत में मुकद्मा (कोर्ट मार्शल) चलाया। उनके ऊपर राजा के विरुद्ध षड्यंत्र रचने का आरोप लगाया गया।

(इसके बारे में आप इकाई सं. 37 में पढ़ेंगे)

बोध प्रश्न 3

1 आज़ाद हिंद फ़ौज के गठन को सिलसिलेवार लगभग पांच पंक्तियों में बताइये।

....

....

....

....

....

....

2 निम्न में से कौन से कथन सही (✓) या गलत (x) हैं।

i) आज़ाद हिंद फ़ौज का गठन सुभाष चंद्र बोस ने किया था। ☐

ii) सुभाषचंद्र बोस ने पूरी तरह जापानी नीति का अनुसरण किया। ☐

iii) अंग्रेज़ भारतीय सैनिकों की वफ़ादारी पर और अधिक भरोसा नहीं कर सकते थे। ☐

iv) आज़ाद हिंद फ़ौज भारत की ज़मीन तक पहुंच गयी। ☐

3 भारत के स्वतंत्रता संघर्ष पर आज़ाद हिंद फ़ौज का क्या प्रभाव पड़ा? लगभग दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

34.6 सारांश

युद्ध के प्रति भारतीय जनता के विभिन्न वर्गों के विभिन्न दृष्टिकोण थे, और ये सब कांग्रेस में प्रतिबिम्बित होते थे। गांधीजी द्वारा शुरू किया गया व्यक्तिगत सत्याग्रह, सहभागिता की सीमित प्रवृत्ति के कारण, व्यापक रूप से प्रभावशाली सिद्ध नहीं हुआ। भारत को युद्ध में घसीट लिए जाने के बाद भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ, मगर इस आंदोलन के निर्णय तक पहुंचने में तीन साल का समय लगा। आंदोलन शुरू करने की घोषणा के साथ ही अंग्रेज़ों ने निष्ठुर दमन की नीति अपनायी। रातों रात कांग्रेस के सभी नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया गया, और कांग्रेस को एक निश्चित कार्य-दिशा तय करने का समय तक नहीं मिल सका। फिर भी आंदोलन अपनी रफ़्तार से आगे बढ़ा। लोगों ने अपने-अपने स्तर पर कार्य-दिशायें तय कर लीं। आंदोलन को नेतृत्व देने में युवक और समाजवादी अग्रिम मोर्चे पर रहे। अपने प्रारम्भिक चरण में शहर के लोग ही आंदोलन में सक्रिय रहे, मगर शीघ्र ही आंदोलन देहात में भी फैल गया। कई क्षेत्रों में अंग्रेज़ सरकार उखाड़ दी गई और समानान्तर सरकारों की स्थापना कर दी गई। इस संघर्ष में लोगों द्वारा अपनाए गए तरीक़े, गांधीजी की अहिंसा की सीमाओं से बाहर निकल गए और कांग्रेस का उदार वर्ग उन पर नियंत्रण नहीं रख सका।

अंग्रेज़ आंदोलन को कुचलने में सफल हो गए, परंतु भूमिगत कार्रवाइयां लम्बे समय तक चलती रहीं। इस आंदोलन में अंग्रेज़ों के सामने स्पष्ट कर दिया कि लम्बे समय तक भारत पर कब्ज़ा किए रहना उनके लिए सम्भव नहीं होगा, और आज़ाद हिंद फ़ौज द्वारा चलाए गए साहसिक संघर्ष ने इसी बात को फिर से पुष्ट किया।

13. आज़ाद हिन्द फ़ौज के सिपाही

34.7 शब्दावली

सामूहिक जुर्माना : सरकार द्वारा उस क्षेत्र के निवासियों पर किया गया जुर्माना जिस क्षेत्र में दंगे आदि हुए हों।

संविधान सभा : संविधान निर्माण संबंधी कार्यों के निष्पादन के लिए गठित की गई संस्था।

फारवर्ड ब्लाक : सुभाषचंद्र बोस द्वारा 1940 में गठित की गई पार्टी।

जन युद्ध (पीपुल्स वार) : सोवियत संघ पर हिटलर के आक्रमण के बाद कम्युनिस्टों द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए प्रयुक्त शब्द।

34.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1 आपके उत्तर में उपभाग 34.2.1 में उल्लिखित चार विचारों का समावेश होना चाहिए।

2 i) ✓ ii) ✓ iii) × iv) ✓ v) × vi) ×

3 i) विरोध ii) इंग्लैंड और फ्रांस, बढ़ जाएगा iii) महसूस करते थे, नागरिक अवज्ञा iv) रामगढ़, अप्रसन्न v) शुरू

बोध प्रश्न 2

1 i) ✓ ii) × iii) ✓ iv) × v) ✓ vi) ×

2 अपने उत्तर को उपभाग 34.4.1 और 34.4.2 के पाठों पर आधारित कीजिए। इसमें पुलिस थानों पर हमले, समानान्तर सरकारों का गठन जैसी जनता की कार्रवाइयों को शामिल किया जाना चाहिए।

3 ये थे, जुर्माना करना, लोगों पर गोली चलाना, गिरफ़्तारियां इत्यादि। देखिए उपभाग 34.4.3

बोध प्रश्न 3

1 देखिए उपभाग 34.5.1 अपने उत्तर में आपको अच्छी तरह स्पष्ट करना चाहिए कि आज़ाद हिंद फ़ौज का गठन रास बिहारी बोस ने किया था सुभाषचंद्र बोस ने नहीं।

2 i) × ii) × iii) ✓ iv) ✓

3 देखिए भाग 34.5.3